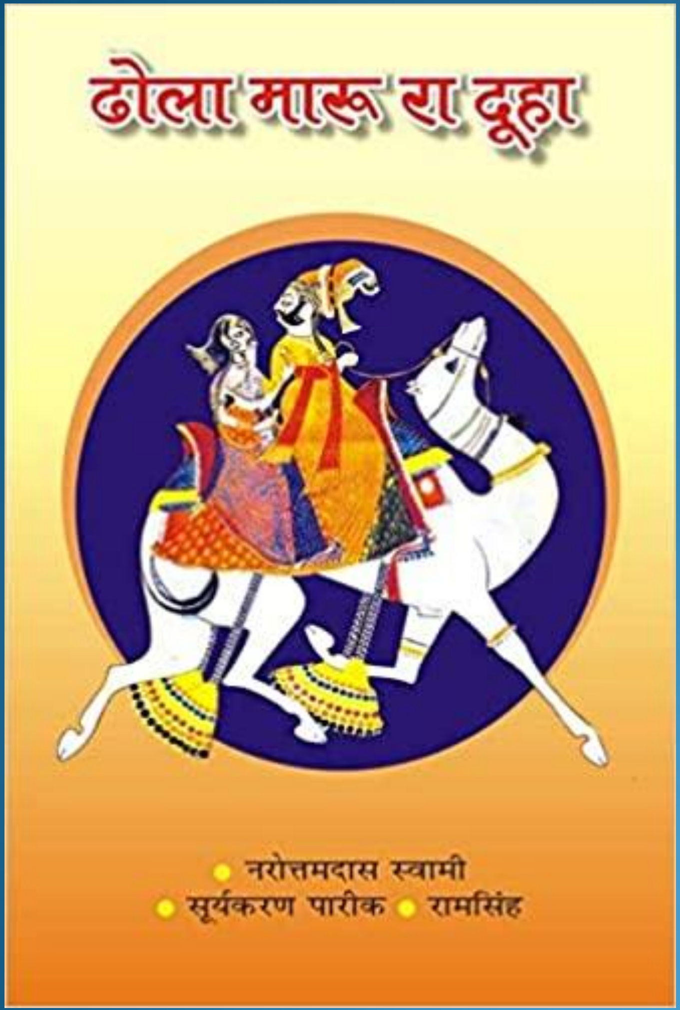

ढोला मारू रा दूहा

(दोहा 146 से 150)

डॉ. नवीन नंदवाना
हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

मारवणी का संदेश - 146

जइ तूँ ढोला नावियउ, कइ फागुण इक चेत्रि।

तउ म्हे घोड़ा बाँधिस्याँ, काती कुड़ियाँ खेत्रि।।१४६

भाव-

हे ढोला, यदि तुम या फाल्गुन में या चेत्र में नहीं आए तो हम ही कार्तिक में, फसल कट आने पर, घोड़ो पर जीन कसेंगी।

मारवणी का संदेश - 147

जउ साहिब तू नावियउ, मेहाँ पहलइ पूर।

विचइ वहेसी वाहला, दूर स दूरे दूर ।।१४७

भाव-

हे नाथ, जो तुम मेघों के प्रथम धारापात पर नहीं आए तो बीच में नाले बहने लगेंगे और जो दूर हैं वह दूर से भी दूर हो जाएगा।

मारवणी का संदेश - 148

सज्जणिया, सावण हुया, धड़ि उलटी भंडार।

विरह महारस ऊमटइ, के ताकहूँ सँभार।।१४८

भाव-

हे साजन, यह सावन आया, पृथ्वी ने अपना गुप्त भंडार उलट दिया। विरह का महा जलप्रवाह उमड़ रहा है, उसको कौन सँभालेगा।

मारवणी का संदेश - 149

जउ तूँ साहिब नावियउ, सावण पहिली तीज।

बीजळ तणइ झबूकडइ, मूंध मरेसी खीज।।१४९

भाव-

हे नाथ, यदि तुम सावन की प्रथम तीज पर नहीं आए तो बिजली की चमक से मुग्धा मारवणी खिजलाकर मर जाएगी।

मारवणी का संदेश - 150

जइ तूँ ढोला नावियउ, काजळियारी री तीज।

चमक मरेसी मारवी, देख खिवंताँ वीज।।१५०

भाव-

हे ढोला, जोतू कजरी की तीज पर नहीं आए तो बिजली को चमकती हुई देखकर मारवणी चौंककर मर जाएगी।